भाजपा का भरोसा मोदी में और मोदी का पाकिस्तान में....

दिल्ली की चुनावी गली से
विवेक की विशेष रिपोर्ट

एक बार तशरीफ तो लाइए हुजूर हमारी गाड़ी के पास, शुद्ध चने खाइए मस्त हो जाइए। ठेले पर स्पीकर लगा कर दालों और मसालों को बेचने का ये अंदाज मोहम्मद अकरम की यूएसपी है। 50 वर्षीय अकरम दिल्ली कालकाजी के किनारे बसे नवजीवन कैंप में रोज अपने माल को इसी अंदाज में बेचते हैं।

काम कैसा चल रहा है, ये पूछते ही अकरम भड़क गए। बोले, क्या करोगे जान कर? मैने कहा छापूंगा तुम्हारी बात अखबार में और सबको पता चलेगा कि सरकार क्या कर रही है। अकरम ने कहा छाप लिया भई तूने, मैं कहूँगा कुछ, तुम छापोगे कुछ और। मेरे ये कहने पर कि ऐसा क्यों समझते हो, मैं ऐसा नहीं करता। तो बोले, तुम अलग पत्रकार हो कोई जो मुसलमानों को गद्दार न बताओ? अगर ऐसा न होता तो जिन्दगी अच्छी नहीं न सही पर आज जैसी बद्तर नहीं होती।

दादरी से दिल्ली आये अकरम का यही काम पिछले 17 सालों से जमा हुआ था। अकरम ने बताया कि ज्यादातर ग्राहक हिन्दू औरतें थीं। काम बहुत बढ़िया तो नहीं था, हां इतना जरूर था कि रोजी-रोटी तबियत से चल जाती थी। फिर केंद्र में आये मोदी जी और राज्य में आये योगी जी। एक ने कहा चाय बेची है दूसरे ने कहा बेचने-खरीदने से ऊपर होकर मैने सब त्याग दिया और जोगी बन गया। ये कहते-कहते दोनों ने देश को बेच दिया। अब देश बेचा तो वो अलग पर झगडे लगा दिए। ऐसा कर दिया कि हम जैसे मुसलमान कुछ न बेच पायें। क्या बेचता हूँ मैं, दाल और मसाला। पर भाई साहब मुझपर मेरे ही इलाके में देश बेचने के आरोप लगने लगे। मेरी बीवी हिन्दू घरों में अनाज निकलवाने का काम किया करती थी। पर अगला? काण्ड के बाद उसे तक निकाल दिया गया काम से, फिर अचानक मुझसे दाल लेनी भी बंद हो गई और जो लेता भी था तो वो भाव इतना तुड़वाने लगा कि मैं खुद मना कर दूँ सौदा देने से। एक दिन मेरी बीवी और मां ने रो-रो कर मुझे कसमें और डर दिखाया कि मैं दादरी छोड़ कर कहीं और दाल बेचूं या कोई और धंधा कर लूँ। इससे पहले कि मेरी रेहड़ी को योगी पाकिस्तान का दिया तोप या टैंक साबित कर देते मैं दिली निकल आया।

1। साल की बनाई जमीन और ग्राहकी एक झटके में चली गई। यहाँ आया तो ऐसे ही मोहल्ले ढूंढे जहाँ गरीब रहते हों क्यूंकि मुझ जैसे रेहड़ी वाले से तो वही खरीदेंगे न? पर गरीबों में भी अब हिन्दू मुसलमान बसते हैं। पता नहीं कब किसका भाजपा वाला हिन्दू जाग जाए और मैं अल्लाह को प्यारा हो जाऊं इसलिए मुसलामानों वाले इलाके में ही दाल बेचता हूँ। वैसे बकरा बेचता तो शायद ज्यादा फायदा होता पर फिर ना जाने कब उस बकरे को गाय बना कर मुझे अल्लाह के पास भेज दें इसलिए बस दाल से काम चला रहा हूँ। ये कहते हुए अकरम ने अपनी रेहड़ी पर आये दो ग्राहकों को मेरी तरफ इशारा करते हुए बताया कि ये भईया लिखते हैं अखबार में। बोल, रहे हैं कि वही छापूंगा जो मैं बोल रहा हूँ। पर वो अखबार पढ़ेगा कौन? आप दोनों ही न। तो ये जान लीजिये भाई साहब आप भी और आप दोनों भी कि मैने कहीं सुना था और मेरे दिल में उतर गई ये बात कि अगर आप अखबार नहीं पढ़ते तो आपको कुछ नहीं मालूम और अगर पढ़ते हैं तो आपकी मालूमात सब गलत हैं।

नवजीवन कैंप साउथ दिल्ली के कालकाजी इलाके में आता है। साउथ दिल्ली सुन कर बाकी दिल्ली वालों और एनसीआर वालों को भी यही लगता है कि फर्राटेदार अंग्रेजी में जवान लड़के-लडकियां, बढ़ी-बढ़ी कोठियां और चमचमाती सड़कों पर लम्बी गाड़ियों का इलाका। पर लगने और होने में फर्क वैसा ही है जैसे मोदी जी के भाषणों में शामिल विकास और अकरम के मुह से निकली बात में।

प्रधानमन्त्री को लेकर इतनी नाराजगी और असंतोष क्यों हैं आप सब में, ये पूछने पर चाँद मोहम्मद नामक एक बुजुर्ग जिनकी उम्र 80 से भी ज्यादा थी बोले यकीनन ये आदमी भारत जैसे देश का प्रधानमन्त्री बनने लायक नहीं है। भारत से मतलब सिर्फ हिन्दू तो नहीं है, इसके राज में हमारे बच्चों को फर्जी मामलों में पुलिस परेशान कर रही है। मोदी को मारने की साजिश के नाम पर झूठ फैलाया जा रहा है। ट्रेक्टर के पूर्जों को दिखा कर मिसाइल दागने का हथियार बता देते हैं और इसी बिनाह पर मासूम बच्चों की लिन्दगी बर्बाद कर रहे हैं। चाँद मोहम्मद के अनुसार उनके एक रिश्तेदार को बुलंदशहर में दंगा फैलाने के नाम पर पुलिस ले गई और इतना मारा कि बेचारा कई दिन बिस्तर पर रहा। आप ही बताओ किसी ने इस मोदी को मारना होता तो गुजरात के बाद न मार लिया होता जब इसने कत्ल कराये। अब जब ये प्रधानमंत्री बन गया है तो पंचर बनाने वाले का बच्चा इसे ट्रेक्टर के पुर्जे में मिसाइल लगा के उड़ा देगा? क्या बकवास है।

46 वर्षीय जावेद पिछले 30 सालों से नवजीवन कैंप में रह रहे हैं। जावेद ने बताया कि इस बार का चुनाव जो भी हो पर हम चाहते हैं कि मोदी जाए अब। इसलिए नहीं कि मैं मुसलमान हूँ, इसलिए कि हम हिन्दोस्तानी हैं। हिंदुस्तान के इतिहास में ऐसा गंदा प्रधानमंत्री नहीं देखा मैने। क्या बात करता है ये आदमी। ये जो बड़ी कोठियों में रहते हैं ये हमें सड़क छाप समझते हैं क्योंकि हम गंदे इलाके में रहते हैं और हमारी जबान में वो अंग्रेजी नहीं है जो इंसान को जहीन बना देती है। पर आपको सच बताऊँ तो हम भी प्रधानमंत्री को सड़क छाप समझते हैं और न जाने कैसे ये बड़े-बड़े लोगों को इसकी असलियत नहीं दिखती।

नवजीवन कैंप में ही बिस्किट और नमकीन बनाने की छोटी सी अपनी जगह में बैठे 40 की उम्र के सलीम ने बताया कि कल ही आम आदमी पार्टी का रोड-शो था। राघव चड्ढा नाम का एकदम नया लड़का उनका उमीदवार है। आप ने इस इलाके में पानी की पाइपें बिछाई हैं। आजादी के बाद पहली बार ऐसा हुआ कि यहाँ पानी की पाइप आई। वरना आप देख सकते हो कि हम कभी-कभी नाली का पानी पीने को भी मजबूर हुए हैं। ये कहते हुए सलीम ने संकरी गली के बीच में बने एक गड्ढे को दिखाया जिसमे पानी जमा था और नीचे के पानी को जमीन तक लाने का एक प्रकार का कुआं ही बना हुआ था। ऐसे कई कुंए पूरी गलियों में खुदे पढ़े हैं और जिन्हें स्थानीय निवासी 40-50 साल पुराना बता रहे हैं।

36 वर्षीय दानिश ने कहा कि दिल तो करता है कि आम आदमी पार्टी को वोट करूँ जिसने काम करने शुरू तो किये वरना कांग्रेस और भाजपा से कोई उम्मीद करने का पाप नहीं कर सकते हम। पर मजबूरी है जो कांग्रेस को वोट देना पड़ेगा। ऐसी क्या मजबूरी है? दानिश ने कहा जान की मजबूरी है जी। केंद्र का चुनाव है तो मोदी की टक्कर में कांग्रेस ही है न। आप वाले को वोट देने का मतलब मोदी को जिताना ही होगा। पर विधानसभा के चुनाव में आप को ही वोट देंगे।

केरल के निवासी 40 वर्षीय विजयन सब्जी खरीदने गोविन्दपुरी और उसके आस-पास के इलाके में आते हैं। विजयन ने तंज कसते हुए कहा कि तुम हिंदी वालों का क्या बुरा हालात हो गया है, हमारा केरला में आ के देखो हिन्दू-मुसलमान कितना आराम से रहता है। मैं जब अपने लोगों को वह बताता है कि कैसे नार्थ इंडिया में इतना लड़ाई-झगडा चल रहा है तो वो मेरे को भी बोलते हैं कि वापस आ जाओ। विजयन का वोट केरल में हैं पर कहते हैं कि दिल्ली में होता तो आम आदमी को वोट करता। ऐसा क्या खास किया है 'आप' ने, तो विजयन ने कहा स्कूल और मेडिकल तो मैं देख रहा है रो?। बिल्डिंग तो सबको दीखता होगा और हमारा केरला में भी पढाई पर बहुत ध्यान है तो आई लाइक दिस पार्टी।

कालकाजी में रहने वाले चरणजीत सिंह देश के बंटवारे के समय अपना सब कुछ लाहौर में छोड़ आये थे। चरणजीत ने बताया कि पकिस्तान में आज भी उनके रिश्तेदार हैं। उनका कोई अता-पता तो उनको नहीं मालूम पर हैं ये वो जानते हैं। जिस पाकिस्तान को ये राजनैतिक दल हमारा दुश्मन बता रहे हैं वो बनाया भी इन्ही ने और अब रोज उसके झूठे खतरे दिखा कर हमे मीडिया के रास्ते भड़काते भी यही नेता हैं। एक भाई अगर बंटवारा करके अलग हो जाए तो क्या वो भाई नहीं रह जाता? उसे हम क्या सारी जिन्दगी अपना दुश्मन मानते रहें। मोदी जी अगर काम किये होते तो उन्हें आज पाकिस्तान की जरूरत नहीं होती। वोट किसे देंगे, सिंह ने बताया कि पिछली बार मोदी को वोट दिया था पर काम तो आप वालों ने किया है। फिर भी इस बार क्योंकि लोकसभा का चुनाव है इसलिए वोट कांग्रेस को देंगे ताकि मोदी न जीत जाए।

साउथ दिल्ली के भ्रम में जीने वाले अधिकतर लोगों को ये जान लेना चाहिए कि 19 लाख की आबादी में मात्र 1 प्रतिशत ही ग्रेटर कैलाश और वसंत विहार जैसे इलाकों में रहते हैं जबकि 10 प्रतिशत फ्लैट में। पर बाकी की जनसंख्या इसी तरह के अव्यवस्थित इलाकों में जीने को शापित है। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान और फर्जी राष्ट्रवाद जैसी बातों का असर बेशक सोशल मीडिया में दिख सकता है पर जमीनी हकीकत एकदम अलग दिखाई दे रही है।

कश्मीर जैसे मसलों का तथाकथित हल खोजने वाले नौकरशाहों और राजनेताओ को चरणजीत सिंह की व्याख्या का मर्म समझ आ जाता तो शायद ये समस्या दोनों देशों की क्षमता में तब्दील हो जाती। इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि जिस देश में परेशानियाँ इंसान को लील लेने के लिए हर पल तैयार रहती हैं, उन समस्याओं पर एक शब्द भी देश का प्रधानमन्त्री नहीं बोलता जबकि वादा इनको दूर करने का ही था। । दुष्यंत कुमार के शेर की प्रासंगिगता को मोदी जी ही सिद्ध करते आ रहे हैं:

कहां तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए , कहां चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए

खैर चुनाव के इस मौसम में ये साफ है कि भाजपा को अपने नायक मोदी का सहारा है और मोदी को खलनायक पाकिस्तान का। जबकि जनता का एक बड़ा तबका भाजपा के नायक का चरित्र चित्रण एक खलनायक के तौर पर करता दिख रहा है। देखना ये है कि कांग्रेस और आप ने परस्पर समझौता न कर के जो गलती की है उसका चुनावी खामियाजा दोनों कितना भुगतेंगे अब।

कमिश्नर अंग्रेजी शिक्षक से करा रहीं क्लर्की

कमिश्नर डा० जी.अनुपमा

बल्लबगढ (म.मो.) शहर से सटा गांव है चंदावली। यहां के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में 9 वीं, 10 वीं, 11 वीं, तथा 12 वीं कक्षा में 500 से अधिक विद्यार्थियों को अंग्रेजी पढ़ाने के लिये मात्र दो प्राध्यापक तैनात हैं जो कि इतनी बड़ी संख्या के लिये अपर्याप्त हैं। सरकार द्वारा एक और शिक्षक तो दिया नहीं गया, बल्कि दो में से भी एक हंसराज पांचाल को मंडल आयुक्त (कमिश्नर) डॉ. जी अनुपमा ने अपने दफ़्तर में बीते करीब 6 माह से तैनात कर रखा है। अंग्रेजी का प्रध्यापक होने के नाते पांचाल अच्छी ड्राफ़्टिंग कर लेते हैं। इसलिये कमिश्नर ने उन्हें बच्चे पढाने की बजाय अपने कार्यालय में तैनात कर लिया है। कार्यालय में कमिश्नर की ओर से होने वाले तमाम पत्राचार का जिम्मा पांचाल सम्भालते हैं।

इस बाबत ज़िला शिक्षाधिकारी सतेन्द्र कौर वर्मा से फ़ोन पर पूछा गया तो उन्होंने स्वीकार किया कि पांचाल की अस्थाई तैनाती कमिश्नर कार्यालय में चल रही है। उन्होंने स्वतः यह भी बताया कि प्राइवेट स्कूलों द्वारा वसूली जा रही फ़ीस आदि की जांच-पड़ताल के लिये पांचाल को वहां तैनात किया गया है। बीते 6 माह से फ़ीसों की जांच-पड़ताल ही हो रही है? इसके जवाब में थोड़ा रुक कर उन्होंने कहा कि हां यह तो चलती रहती है। वीडियो कानफ्रेंसिंग में जाने की जल्दी में बच्चों की पढाई के बारे में वे केवल इतना बता पाईं कि इसके लिये वैकल्पिक व्यवस्था कर दी गयी है, वहां एक शिक्षक है। तो क्या पांचाल वहां सरप्लस (फ़ालतू) थे? नहीं, सरप्लस तो नहीं थे, लेकिन व्यवस्था है, बाकी जून में स्थाई व्यवस्था कर दी जायेगी।

जहां बच्चों को पढाने के लिये शिक्षक ही न हों तो कोई अभिभावक अपने बच्चों को अमूल्य समय बर्बाद करने को क्यों भेजेगा? जिसके पास थोड़ी-बहुत सामर्थ्य है वह अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेजने को मजबूर है। उधर जब बच्चों की संख्या घटती है तो सरकार को स्कूल बंद करने का बहाना मिल जाता है। इसी के चलते खट्टर सरकार ने राज्य में हज़ार से ऊपर स्कूल बंद कर दिये हैं।

दूसरी ओर खट्टर सरकार ने यहां कमिश्नर कार्यालय के अलावा एक एसडीएम कार्यालय व 3 नई उप तहसीलें बना दीं लेकिन स्टाफ़ की भर्ती नहीं की। ऐसे में दफ़्तरी स्टाफ़ का अकाल तो पड़ना ही था, सो पड़ा हुआ है। इसे पूरा करने के लिये प्रशासनिक अधिकारी उस शिक्षा विभाग से शिक्षकों को पकड़ लेते हैं जहां पहले से ही शिक्षकों का अकाल पड़ा है। जब परीक्षा परिणाम ज़ीरो प्रतिशत आता है तो शिक्षामंत्री रामबिलास हर साल जांच बैठा देता है जिनका परिणाम भी हर बार जीरो प्रतिशत ही रहता है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06